21वीं शती का हिन्दी साहित्य

नये आयाम

• डॉ. मुमताज़ बी.एम.

Scanned with CamScanner

प्रकाशक
विनय प्रकाशन
3A/128, हंसपुरम्
कानपुर–208021
सम्पर्क : 0512-2626241, 09415731903
vinayprakashankanpur@gmail.com
Website : www.vinayprakashan.com

ISBN : 978-81-89187-85-9

© संपादक

प्रथम संस्करण : 2019

मूल्य : 750.00 रुपये

शब्द साज :
विष्णु ग्राफिक्स, कानपुर

मुद्रक :
पूजा प्रिण्टर्स, कानपुर

21We Sati Ka Hindi Sahitya : Naye Aayam

Edited By : Mumtaz B. M.

Price : Rs. Seven Hundred Fifty Only.

Scanned with CamScanner

23. दलित विमर्श — 127 – 133
अनुपम कुमार राम

24. दलित विमर्श — 134 – 139
मूर्ति

25. समकालीन दलित कविता : प्रमुख प्रवृत्तियाँ — 140 – 144
डॉ. श्रीलता पी.

26. चयनित 'दलित कहानियों' का समाजशास्त्रीय अध्ययन — 145 – 149
पंकज यादव

27. हिन्दी उपन्यास साहित्य में दलित विमर्श — 150 – 156
डॉ. शमीला परवीन

28. हिन्दी दलित आत्मकथाओं में जीवन की त्रासदी — 157 – 162
आनंद दास

29. दलित साहित्यकारों का डोगरी–गद्य साहित्य में योगदान — 163 – 167
डॉ. चंचल भसीन

30. इक्कीसवीं सदी की नव–वामपंथी कविताओं पर समकालीन विमर्श का प्रभाव — 168 – 171
षैजू के

31. समकालीन हिन्दी उपन्यासों में चित्रित आदिवासी किसानों की त्रासदी — 172 – 176
डॉ. मुमताज़ बी. एम.

32. अकाल में उत्सव उपन्यास में चित्रित किसान जीवन — 177 – 183
सीमा देवी

33. भीमसेन त्यागी का उपन्यास 'जमीन' और किसान जीवन की त्रासदी — 184 – 188
सुशील कुमार

Scanned with CamScanner

25

समकालीन दलित कविता : प्रमुख प्रवृत्तियाँ

हिन्दी दलित साहित्य में समसामयिक कविता विशेष रूप से बहुरूपात्मक परिलक्षित होती है। जहाँ महानगरीय जीवन को आधार बनाकर दलित वर्ग का चित्रण करती है, वहीं सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों की यथार्थता की जमीन को भी स्पष्ट करती है। इसके बारे में पुरुषोत्तम सत्य प्रेमी का कथन है कि – "समसामयिक कविता की रचना– क्रिया की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि समसामयिक कविता नितप्रति नवीन विषय प्रतिपादित करती चलतीहै। अद्यतम अब काव्य का क्षेत्र विस्तृत हो गया है। पाश्चात्य सभ्यता का अन्धानुकरण, संत्रस्त नारी जीवन की स्थिति, बाल अपराध, मनोवैज्ञानिक शोषण, बेरोजगारी, पाखण्ड एवं कुरीतियाँ इत्यादि कोई भी क्षेत्र समसामयिक कविता से अछूता नहीं रहा है।" (डॉ. पुरुषोत्तम सत्य प्रेमी, दलित साहित्य रचना और विचार पृः 32)

समसामयिक दलित कविता में भारतीय राजनीति भी प्रभावित हुई है। दलित साहित्य के माध्यम सेराजनीतिक रचना करने वाले कवि हैं – डॉ. गोपालबाबू, अज्ञेय, प्रभाकर माचवे, केवल भारती, डॉ. जगदीशगुप्त, बिहारीलाल कल्वार, गौरीशंकर विधायक आदि। दलित वर्ग को संघर्ष का आह्वान करते हुए डॉ. रणजीत, मुद्रा राक्षस इत्यादि रचनाकारों ने उन्हें अपने अधिकार प्राप्त करने की प्रेरणा दी। इसी सन्दर्भ में अज्ञेय ने "काँच के पीछे मछलियाँ" नामक कविता में मानव समाज की वर्ग भावना को चित्रित किया है और केदारनाथ सिंह की कविता "पाँच पिल्ले" समसामयिक कविता यथार्थ की भूमि को स्पष्ट छूती है। इसमें मानवीकरण का पुट अधिक होता है। निराला की "चातुरी – चमार", अमृतलालनागर की "नाच्चो बहुत गोपाल", नागार्जुन की "हरिजन गाथा", जगदीशचन्द्र की "धरती धन न अपना" आदि कविताओं में दलित जीवन का मार्मिक चित्रण है जो अप्रतिम है। सच्चाई तो यह है कि कविता शब्द में प्रस्फुटित होती है और अर्थ में अभिव्यक्त होती है।

आज बड़ी मात्रा में दलित कविताएँ लिखी जा रही हैं। उनमें व्यवस्था के प्रति जहाँ तक आक्रोश है, वहीं पर व्यवस्था बदलने के लिए दलितों का आह्वान है, और उनका उद्‌बोधन भी। वर्तमान दलित कविता की दूसरी विशेषता नही कविता है। जिसमें छन्दों के बन्धनों को तोड़कर रचनाएँ की जार ही है। मराठी एवं हिन्दी के सशक्त एवं लब्धप्रतिष्ठ कवि दिनकर सोथ बाल करने अपने

Scanned with CamScanner

मानवता की प्रतिष्ठा से सर्वेच्च मूल्य मानने वाला कवि मानवता की हत्या करने वाली शक्तियों के विरुद्ध संघर्ष के लिए तैयार घड़ा है। अज्ञान, विषमता, दरिद्रता के कारण सामान्य आदमी दुःखी है, लेकिन जीने की अदम्य इच्छा अभी उसमें बची है। दलित कवि भी इन्हीं सामान्य में से एक है। अतः अपने संघर्षशील जीवन की व्यथा को न भूलकर वह मानवता के प्रति निष्ठावान है। नारायण सूर्वे कहते हैं: ""मनुष्य क लिए और मनुष्य के बारे में ही मुझे लिखना है और इसका मुझे कभी विस्मरण नहीं होगा। करोड़ों जनता से मैं अपना नाता तोड़कर अलग होना नहीं चाहता। यही सब मेरी रचना के विषय हैं। (भालचन्द्र फडके – दलित साहित्य वेदनाप विद्रोह पृ : 113 से उद्धृत)

आशावाद –

कल के सुन्दर, संपन्न और समतामय भविष्य के स्वप्न को साकार करने की अदम्य इच्छा और विश्वास दलित कविता की विशिष्टता है। वर्तमान समाज व्यवस्था के द्वारा किये गये अत्याचारों के विरुद्ध आवाज बुलन्द करने वाले कवि भविष्य के स्वप्न भी देखते हैं।

दलित कवि पग–पग पर मिलने वाले अंधकार से टकराने पर भी प्रकाश के सार्वभौम युग की निर्मित करने के लिए सुसज्जहै। भविष्य चाहें उसके विश्वास को ठेस पहूँचाये लेकिन दलित कवि का आशावाद नष्ट नहीं होता। वेदना और अभावकी जिन्दगी जीते हुए भी दलित कवि निराश नही हुए। मराठी अ दलित साहित्यकारों की परंपरावादी और नियतिवादी मानसिकता से विद्रोही दलित कवियों की मानसिकता अलग है। (जयप्रकाश कर्दम – दलित साहित्य 2006 पृ : 19)। वे नियति को अपने हाथों बदलना चाहते हैं। पराजय और निराशा को अपने पास नहीं फटकने देते, आशावाद और अस्तित्व बोध से प्रेरित होकर नये इतिहास के निर्माण में सक्रिय है।

दलित कविता जीवन के यथार्थ की कविता है। दलित कवि के सामने भावावेग में बहने के अनेक अवसर थे, क्योंकि उसने जीवन की बड़ी घिनौनी तस्वीर देखी है पर उसकी कविता जीवन के वस्तुग तय थाथ व्यंजना करती है। दलित कविता केवल वेदना, अपमान, अन्याय, अत्याचार, दरिद्रता के व्यौरे प्रस्तुत करने वाली कविता नहीं है। वह क्रांति का सन्देश देने वाली और अन्धकार से प्रकाश की ओर ले जाने वाली एक प्रखर विचारधारा की काव्यात्मक अभिव्यक्ति है।

डॉ. श्रीलता पी. कोटायम
एसोसिएट प्रोफेसर
(केरल)

Scanned with CamScanner